खलनायक ले चुके नायक की जगह

संवाद न्यूज एजेंसी

जीबी पंत संस्थान की ओर से आयोजित कार्यक्रम में मंचासीन अतिथिगण। अमर उजाला

झूंसी। जानी मानी कथा लेखिका ममता कालिया का कहना है कि हिंदी लेखन के बदलते दौर में अब नायकों की जगह खलनायकों ने ले ली है। विभिन्न परिस्थितियों और काल में हिंदी साहित्य के लेखन में अलग-अलग नायक हुए हैं।

आजादी के अमृत महोत्सव के तहत जीबी पंत संस्थान में साहित्य अकादमी के सहयोग से आयोजित दो दिनी राष्ट्रीय संगोष्ठी के समापन पर 'साहित्य में नायक की भूमिका' विषयक संगोष्ठी में बतौर अध्यक्ष उन्होंने कहा, शेक्सपीयर के ट्रैजिक हीरो के जमाने गए। मौजूदा समय खलनायकों का है। हमें अपनी लेखनी के पैमानों की पड़ताल नए सिरे से करनी होगी। लेखन की नई दृष्टि विकसित करनी होगी।

प्रो.ललित जोशी ने कहा, स्क्रीन इमेज बहुत महत्वपूर्ण होती है जो कई बार खलनायक को नायक के बराबर खड़ा कर देती है। कथाकार अखिलेश ने कहा, आधुनिक युग नायकत्व से मोहभंग का है। जगन्नाथ दुबे ने जोड़ा, धरती को स्वर्ग बनाने की आकांक्षा नायक बनाती है। तृतीय सत्र में 'हाशिए के नायक' विषयक संवाद में प्रीति चौधरी ने कहा, स्त्रीत्व को नायकत्व के साथ समझना होगा। यह परस्पर विरोधी नहीं है। सत्र अध्यक्ष वरिष्ठ साहित्यकार शरण कुमार लिंबाले ने कहा, हमें कम न आंको, हमारे भी हीरो हैं जिन्हें इतिहास ने अदृश्य बना दया। संस्थान के निदेशक बद्री नारायण ने संयोजन और संस्थान की एसोसिएट प्रोफेसर डॉ.अर्चना सिंह ने संचालन किया।